संक्रमण - विषाणु

हर्पीस सिम्पलैक्स (शीत-व्रण)

प्रमुख बिन्दु

- हर्पीस सिम्पलैक्स एक सामान्य विषाणु जनित संक्रमण है जिसमें प्राथमिक संक्रमण होने के बाद द्वितीयक संक्रमण हो जाता है। द्वितीयक संक्रमण की पुनरावृत्ति भी हो सकती है।
- कभी-कभी प्राथमिक संक्रमण की पहचान नहीं हो पाती है, परन्तु यह मुँह मे पीड़ादायक व्रणों, गले में संवेदनशील गिल्टियों और बच्चों में ज्वर के रूप में परिलक्षित होता है
- शीत-व्रण (कोल्ड सोर) के नाम से जाना जाने वाला द्वितीयक या पुनर्संक्रमण एक स्थान पर बार-बार हो सकता है और इसका प्रभाव 2-5 दिनों तक बना रहता है
- एक्ज़ीमा ग्रस्त बच्चे में यदि हर्पीस सिम्पलैक्स से त्वचा का संक्रमण पनपने लगे, तो तुरन्त चिकित्सीय सलाह लेनी चाहिये
- अधिकांश प्राथमिक हर्पीस सिम्पलैक्स के संक्रमणों के उपचार के लिए एंटिवायरल दवाई की आवश्यकता नहीं होती है
- चेहरे पर शीत-व्रणों के पुनः पनपने से बचाव के लिए सूर्यप्रतिरोधक क्रीम का प्रयोग करना चाहिये
- शीत-व्रणों के उपचार के लिए उपलब्ध एंटिवायरल क्रीम या लोशन का उपयोग संक्रमण के चंद घण्टों के अंदर आरम्भ किया जाना चाहिये
- शीत-व्रणों में अक्सर द्वितीयक कीटाणु संक्रमण हो जाता है और बचाव के लिए एंटिसेप्टिक मलहम या घोल का उपयोग करना चाहिये

यह क्या है?

हर्पीस सिम्पलैक्स एक सामान्य विषाणु जनित संक्रमण है जिसमें त्वचा के एक सीमित क्षेत्र में सूजन पैदा होने के साथ फुंसी बन जाती है। पहला (प्राथमिक) संक्रमण बहुधा बचपन में होता है। अक्सर सालों-साल बार-बार होने वाला संक्रमण भी होता है, जिसमें मुँह के इर्द-गिर्द और होठों पर लाली छा जाती है और फुंसियाँ (शीत-व्रण) पनपने लगती हैं।

प्राथमिक संक्रमण की पहचान कभी-कभी नहीं हो पाती है। यह उग्र रूप भी ले सकता है और मुँह मे पीड़ादायक व्रण (अल्सर) और गले में सूजी हुई संवेदनशील गिल्टियाँ पनप सकती हैं। एक्ज़ीमा से त्रस्त बच्चों में एक्ज़ीमा के साथ हर्पीस सिम्पलैक्स के संक्रमण से पूरे शरीर में फुंसियाँ बन सकती हैं, अतः तुरन्त चिकित्सक को दिखाना चाहिये।

प्रायः होने वाला द्वितीयक संक्रमण (शीत-व्रण) सूर्य के तेज प्रकाश या तेज हवा या कभी-कभी मानसिक तनाव के कारण भी विकसित हो सकता है। यह त्वचा में सनसनाहट या जलन जैसी संवेदना से आरंभ हो कर सूजन (लाल, बैंगनी, या भूरा रंग) और फुंसियों में पनप जाता है। यह अवस्था **24-48** घण्टों के दौरान विकसित होती है और **4-5** दिनों में ठीक हो जाती है। शीत-व्रणों में द्वितीयक विषाणु संक्रमण हो सकता है।

इसका उपचार कैसे किया जाता है?

क्योंकि हर्पीस सरलता से सर सकता है, इसलिए सक्रिय शीत-व्रण से ग्रस्त व्यक्ति को अन्य लोगों की त्वचा से सीधा संपर्क नहीं करना चाहिये, जैसे कि चुम्बन नहीं लेना चाहिये।

सूर्य की किरणों से सीधे संपर्क से बचने के लिये सूर्य-प्रतिरोधक क्रीम, पूरे कपड़े, और टोपी का उपयोग करना चाहिये। इससे चेहरे पर शीत-व्रणों की पुनरावृत्ति से बचा जा जा सकता है।

इसका उपचार कैसे किया जाता है?

हर्पीस सिम्पलैक्स के प्राथमिक संक्रमण के उपचार के लिए एंटिवायरल दवाई का प्रयोग अधिकांशतः नहीं की जाती है। मुँह मे व्रण (अल्सर) पनपने की स्थिति में बच्चों को प्रचुर मात्रा में तरल पदार्थ और नर्म भोज्य-पदार्थ देने चाहिये। यदि व्रणों में पीड़ा हो या बुखार चढ़ जाये, तो पैरासिटैमॉल जैसे अतीव्र पीड़ानाशक का प्रयोग काफ़ी है।

शीत-व्रणों के उपचार के लिए बहुत से मलहम और लोशन उपलब्ध हैं। बारम्बार होने वाले इन आक्रमणों के लिए कोई चिरकालीन उपचार उपलब्ध नहीं है। संयोग से यह पुनर्संक्रमण समय के साथ-साथ कम तकलीफ़देह हाते जाते हैं और इनकी पुनरावृत्ति भी घटती जाती है।

शीत-व्रणों के दुष्प्रभाव घटाने के लिए कैमिस्ट / फार्मेसिस्ट के पास उपलब्ध किसी विशेष एंटिवायरल उत्पाद का उपयोग आरंभ के चंद घण्टों के अंदर किया जाना चाहिये। शीत-व्रणों में कीटाणुओं के संक्रमण से सुरक्षा के लिए एंटिसेप्टिक घोल या मलहम का उपयोग किया जाना चाहिये।

और अधिक जानकारी के लिए संपर्क करेंः

जच्चा-बच्चा के लिए प्रशिक्षित नर्स
आपका फार्मेसिस्ट

Hindi – Herpes Simplex (Cold Sores)

आपका पारिवारिक चिकित्सक
त्वचा रोग विशेषज्ञ

© 2002, Department of Dermatology, St. Vincent's Hospital Melbourne, Victoria Parade, Fitzroy, Victoria 3065 Australia.